

खण्ड अ

1. (i) (A) कम उमर में शतरंज के क्षेत्र में नाम कमाना ✓

(ii) (B) असफल होने से जीवन समाप्त नहीं होता ✓

(iii) (C) असफलताओं से शिक्षा ग्रहण करना ✓

(iv) (B) अहंकार और आक्रोश की इच्छा को ✓

(v) (C) कथन सही है लेकिन कारण उसकी ग़लत आख्या करता है। ✓

2. (i) (A) अस्वस्थ होना, वेतन कटौती, आवसायिक मंदी ✓

(ii) (C) संतोषी होना ✓

(iii) (B) विभिन्न चिंताओं से घिरे होने के कारण ✓

(iv) (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही आख्या

(v) (D) I, II, IV ✓

3. (i) (B) सर्वनाम पदबंध ✓

(ii) (C) क्रिया पदबंध ✓

(iii) (C) विशेषण पदबंध ✓

(iv) (A) दोनों कबूतर अब रात-भर खामोश और उदास बैठे रहते हैं। ~~अलग~~

(v) (C) क्रिया पदबंध ✓

4. (i) (D) सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते मत तोड़ो। ✓

(ii) (C) मित्र वाक्य ✓

(iii) (B) संयुक्त वाक्य ✓

(iv) (D) कहा गया है कि बट केवल मानव जाति के ही नहीं सभी पशु-पक्षियों के भी गाने होते हैं।

(V) (B) 1- (III) , 2- (I) , 3- (II) ~~Good Example~~

5. (i) (C) नजर रखना - ध्यान रखना ✓

(ii) (D) तलवार खींचना ✓

(iii) (A) तारे तौड़ लाना ✓

(iv) (B) धक्के धुड़ाना ✓

(v) (D) गुड़ गोबर कर देना ~~Example~~

(vi) (C) चार चौद लेगाना ~~Example~~

6. (i) (B) तत्पुरुष समास ✓

(ii) (D) अव्ययीभाव समास ✓

(iii) (C) भला है जो मानस ✓

(iv) (c) पंजाब - द्विगु समास ✓✓

(v) (d) तीन हैं लोचन जिसके - बहुव्रीहि समास ✓✓ ~~Ext~~ ~~q~~

7. (i) (B) I, III ✓✓

(ii) (c) नेक, सादसी, मददगार ✓✓

8. (A) (B) अहंकार ✓✓

(ii) (d) उनसे हमदर्दी हो आई ✓✓

(iii) (B) उनके रौब में घोड़ी नरमी आ गई ✓✓

(iv) (d) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ✓✓

(v) (c) II, III ✓✓



9. (i) (D) I, IV ✓

(ii) (C) विशाल दर्पण के रूप में ✓

10. (i) (D) मृत्यु तो अवश्यंभावी है ✓

(ii) (C) मछान उद्देश्य के लिए मरने वाले की मृत्यु ✓

(iii) (B) जिस मृत्यु को माद न किया जाय ✓

(iv) (A) अपने लिए जीना - खाना ✓

(v) (C) I, III ✓

खण्ड ब

11. (क) लेखक का हरिहर काका से घनिष्ठ जुड़ाव था। हरिहर काका बचपन में लेखक को बहुत प्यार-दुलार करते थे। वे लेखक को अपने कंधे पर बैठाकर घुमाया करते थे। ठाक पिता का अपने पुत्र के प्रति जितना प्रेम होता है, उससे कई गुना अधिक प्रेम हरिहर काका लेखक से करते थे। गाँव में हरिहर काका की सबसे पहले दोस्ती लेखक से ही हुई थी। हरिहर काका लेखक से कुछ ब्री छिपाते नहीं थे। उसे खुलकर सारी बातें बता दिया करते थे। इन सभी तर्कों से यह सिद्ध है कि हरिहर काका और लेखक का घनिष्ठ जुड़ाव था।

(ख) लेखक को बचपन में प्रकृति अधिक मनोरम लगती थी। बचपन में फूल अधिक खुशबूदार और हरियाली अधिक हरी लगती थी। लेखक के अनुसार जब उसने मनोविज्ञान पढ़ा तो उसे पता चला कि यह सब बालमन के कारण होसा प्रतीत होता था। उस समय उनके विद्यालय की क्यारियों में गुलाब, गेंदा एवं मोतिरिया की दूध-सी सफ़ेद कलियों वाले पुष्प लगे होते थे। वेह और उसके मित्र चंदू चपरासी से आँख बचाकर फूल तोड़ लिया करते थे। बाद में उन फूलों का क्या होता, यह लेखक को ज्ञात नहीं। उसके अनुसार या तो उसकी माँ कपड़े धोते वक्त इन

फूलों को निकालकर फेंक देती या तो वह स्वयं ही उन्हें बकरी के मेसनों की झोंति चर जाया करता। इसके अतिरिक्त उसे अपने विद्यालय के रास्ते के दोनों ओर उगे, बड़े टंग से कटे - छाँटे अलियार अलियार के वृक्ष भी सुंदर लगते जिन्हें वह डंडी कटा करता था। सचमुच प्रकृति बचपन में अधिक सुंदर प्रतीत होती है।

12. (क) श्रीकृष्ण के दर्शनों के लिए मीरा अनेकों कार्य करने को तैयार हैं - वे उनके विचार के लिए बाग - बगीचे लगाना चाहती हैं, उनके दर्शन सुगमता से प्राप्त कर सकें इसलिए ऊँचे - ऊँचे मट्टलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं, वृंदावन की कुंज - गलियों में कृष्ण की लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं। श्वेते कुसुंबी रंग की साड़ी पहनकर यमुना के तट पर अपने आराध्य का आधी रात तक इंतजार करने को तैयार हैं। इनसे यह ज्ञात होता है कि मीराबाई ने श्रीकृष्ण को प्रियतम के रूप में देखा है। वे श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व समर्पित कर चुकी हैं। वे श्रीकृष्ण के दर्शन, नाम - स्मरण स्वपी जेब खर्च और भक्ती रूपी जागीर तीनों प्राप्त कर अपना जीवन सार्थक बनाना चाहती हैं। इनमें उनका हारस्य भाव भी साफ झलकता है। वे कृष्णमय हो गई हैं।

(ग) 'आत्मत्राण' कविता की निम्न बातें मुझे बहुत प्रेरित करती हैं:-

(i) आत्मविश्वास और सजोबल - कवि ईश्वर से यह नहीं कहते कि वे उनके जीवन में विपदाओं, दुख, निराशाओं एवं वंचनाओं न दें बल्कि उनसे जुझने की शक्ति दें। वे कितनी भी विपरीत परिस्थिति में अपना आत्मविश्वास नहीं खोना चाहते। वे ईश्वर से बचाव की नहीं बल्कि साहस की माँग करते हैं। वे यह चाहते हैं कि चाहे सब लोग उन्हें छोड़ा दें, सब दुख उन्हें घेर लें पर उनका बल - पौरुष न हिले, वे हर कष्ट धैर्य से सह लें।

(ii) ईश्वर में आस्था - कवि ईश्वर को कहते हैं कि वे यह चाहते हैं कि दुख में भी ईश्वर के अस्तित्व पर शक न करे, ईश्वर के प्रति उनका विश्वास न टूटे, उनकी आस्था ईश्वर के प्रति कभी भी कम न हो। वे सुख के दिनों में भी हर क्षण ईश्वर को याद करना चाहते हैं, इन्हें भूलना नहीं चाहते। इस प्रकार कवि ईश्वर को सुख - दुख दोनों में सम भाव से याद करना चाहते हैं।

13. (क) प्लेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है - इसके परिप्रेक्ष्य में दो उदाहरण निम्नलिखित हैं :-

(i) मनुष्य की सब कुछ बटोर लेने के कारण नित नई बस्तियाँ स्थापित हो रही हैं। इससे पशु - पक्षियों के स्थान छीन लिए जा रहे हैं। साथ ही वृक्ष, पहाड़ आदि काटे जा रहे हैं जिसके कारण प्रकृति भी अपना वेग दिखा रही है जैसे मरुमि गरमियों में ज्यादा गरमी पड़ रही है, बेवक्त की बरसातें हो रही हैं। जलजले, सेलाब, तूफान और नित नया रोग फैल रहे हैं। ये सब मनुष्य द्वारा स्थापित बस्तियों को तो ह्वस्त करते ही हैं साथ ही पृथ्वी के वातावरण को भी ठेस पहुँचा रहे हैं।

(ii) मुंबई में महानगरीकरण के लिए बिल्डर बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें खड़ी कर रहे हैं। समुद्र तट पर बस्तियाँ बन रही हैं जो समुद्र को पीछे की ओर धकेलती जा रही हैं। समुद्र ने पहले अपनी फैली टाँगें समेटीं, फिर झुक बैठ गया, फिर खड़ा हो गया और जब खड़े रहने की भी जगह न बची तो उसने अपनी ऊँची लहरों से तीन जहाजों को बच्चों की मोंद की तरह फेंक दिया - एक बांद्रा में कार्टर रोड के पास, दूसरा वर्ली में और तीसरा गैटवे ऑफ इंडिया पर जाकर गिरा। वे कभी ठीक नहीं हो पाए।



(24) 'वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी किम कीमत बढ़ाते थे।' - यह कथन गाँधीजी के लिए कहा गया है क्योंकि गाँधीजी आवहारिकता की कीमत समझते थे। वे कभी भी अपने शुरुआत सोने रूपी आदर्शों को आवहारिकता के दूर पर नहीं गिरने दिया करते थे। आवहारिकता को अपने आदर्शों के स्तर पर चढ़ाकर उनकी कीमत को बढ़ाते थे। वे समाज को ऊपर से नीचे गिराने की बजाय सबको नीचे से ऊपर उठाने का प्रयास करते थे। इसलिा कुछ लोगो ने उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' भी कहा। वे अगर आवहारिकता का पुर न देंगे तो कोई भी उनकी आवाज़ नहीं सुनता, वे केवल बोलते रह जाते। आवहारिकता के इस्तेमाल से ही वे लोगो को अंग्रेजो के खिलाफ फूँक पड़ कर पाता थे और साथ ही उन्होंने जो भी व्रत लिए उनका आजीवन और ईमानदारी से पालन किया। एक बार अपने कपड़ों की डोली जलाई तो सदैव एक धोती में ही रहे। इन सभी कारणों से उपर्युक्त कथन की सार्थकता स्पष्ट होती है। ✓

14. (ख)

-बढ़ती नारी -शक्ति

आज के इस बदलते परिवेश में नारी - शक्ति भी सशक्त व प्रबल होती जा रही है। नारी शक्ति ने स्वतंत्र से ही अपनी ज्ञान - बान - शान ऊँची की है। पहले के समय में नारियों को कमजोर समझा जाता था, उन्हें घर पर कैद करके रखा जाता था। सभी नारियों को वही समझते थे परंतु नारियों ने इस मनसा को पूरी तरह गलत घोषित कर दिया है। उन्होंने अपने मजबूत कदमों के सहारे अपना सिर ऊँचा किया है। उन्होंने पुराने रीति - रिवाजों - जिनमें उन्हें कम समझा जाता था को तोड़ दिया है, जैसे - स्त्रियाँ अब घर के बाहर भी काम करने लगी हैं, पहले जो काम केवल पुरुषों द्वारा ही किया जाते थे, वे भी करने शुरू कर दिए हैं। इसमें उनका शिक्षित होना भी एक प्रमुख कारण है। महान स्त्रियाँ जैसे - पंडिता रमाबाई, आदि ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई। उनके प्रयासों की बदौलत आज स्त्रियों ने जीवन के हर क्षेत्र में अपना अटल वर्चस्व स्थापित किया है चाहे वह खेल, सिनेमा या विज्ञान, कुछ भी क्यों न हो। उदाहरण के लिए कल्पना चावला भी हैं जिन्होंने पृथ्वी के बाहर भी स्त्री स्त्रियों का नाम रोशन किया। सचमुच नारी - शक्ति बढ़ती ही जा रही है।

05

15. (क) परीक्षा भवन
अ.ब.स. विद्यालय
क.ख.ग.नगर

दिनांक - 21/02/2024

सेवा में
नगर-निगम अधिकारी
क.ख.ग.नगर निगम
क.ख.ग.नगर

विषय- कूड़े संबंधी समस्या हेतु।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं आपके नगर निगम के अंतर्गत आनेवाले
मोहल्ले च.छ.ज. ~~स्मार्ट~~ का निवासी हूँ। कई दिनों से हमारे
~~स्मार्ट~~ मोहल्ले के कूड़ेदान में गंदगी का ढेर लगा है और कूड़ा
नहीं उठाया जा रहा है।
इससे हमारे मोहल्ले के अंदर हाथिल दूबे वक्त व बाहर
निकलते वक्त भयंकर बदबू आती है और समस्त निवासियों का

जी घबराने लगता है। साथ ही कूड़े के ढेर में मच्छरों ने घर बना लिया है जिससे हमारे मोटल्ले के निवासियों पर डेंगू या मलेरिया होने का खतरा ^{घर में} ~~मोडल्ले~~ ^{वक्त} रहता है। लोगों को घर से बाहर निकलते हुए भी डर लगता है। हमने इस समस्या के संदर्भ में नगर-निगम के स्वच्छता सचिव से संपर्क करने का प्रयत्न किया परंतु वे महाशय तो कोई उत्तर ही नहीं देते।
अतः आपसे अनुरोध है कि आप जितना जल्दी हो सके, इस समस्या का समाधान करवायें।

सधन्यवाद ✓

भवदीय ✓

अजय ✓

16. (24)

From: abc123@gmail.com

To: xyz456@gmail.com

CC

Bcc

विषय- खाद्य पदार्थों में मिलावट पर अंकुश लगाने हेतु।

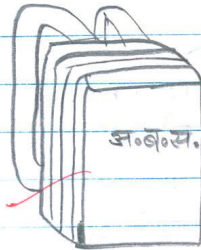
महोदय, स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,
 सविनय निवेदन है कि मैं आपके नगर निगम के
 अंतर्गत आने वाले च.छ.ज. मोहल्ले का निवासी
 हूँ। आजकल हमारे विद्यालय मोहल्ले के कई
 आपसी खाद्य पदार्थों में मिलावट कर उन्हें सस्ते
 दामों में बेच रहे हैं जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर
 बुरा असर पड़ रहा है और बहुत-से लोगों को तो
 अस्पताल तक में भरती किया गया है।
 अतः आपसे अनुरोध है कि जल्द से जल्द
 खाद्य पदार्थों में मिलावट पर अंकुश लगाने के
 लिए कड़े कदम उठाएँ।

05

सधन्यवाद
भारतीय
संशोधन

17. (क)

अ.ब.स. स्कूल बैग उद्घोष



"अब स्कूल बैग को भार नहीं
उपहार समझें।"

हमारे स्कूल बैग की विशेषताएँ:-

- ज्यादा जगह
- सुंदर
- टिकाऊ
- सस्ता
- अनेक रंग उपलब्ध

मूल्य केवल
₹ 510/-

"पाक वार लाफें, पूरे विद्यार्थी जीवन
भर चलाफें।"

पता:- 204, 'बी', क.व.ग. मोहल्ला, च.घ.ज.

नगर; वेबसाइट: abc123.com

संपर्क करें:- 9890XXXXXX

18. (क)

अ० ब० स० विद्यालय
क० ख० ग० नगर

दिनांक - 21/02/2024

(कक्षा ~~IX~~ - ~~IX~~ के छात्रों हेतु)

सूचना

अंतर्विद्यालय कहानी प्रतियोगिता में नाम लिखाने हेतु

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में
अंतर्विद्यालय कहानी प्रतियोगिता का आयोजन
दिनांक - 26/02/2024 को होने जा रहा है।
इच्छुक प्रतियोगिता में भाग लेने को इच्छुक
विद्यार्थी सांस्कृतिक सचिव के पास अपने नाम
दिनांक - 23/02/2024 से पहले लिखवा दें। लिखवा
सकते हैं। आशा है कि आप सब अधिक-से-
अधिक संख्या में भाग लेंगे।

सधन्यवाद

च० छ० ज०

सांस्कृतिक सचिव